आचार्य महाप्रज्ञ को मोहन भागवत ने लिखा पत्र

बीदासर, 14 अप्रैल, 2009।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघ संचालक मोहन भागवत ने राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ को पत्र के द्वारा अपनी भावनाएं प्रेषित की। उन्होंने पत्र में आचार्य महाप्रज्ञ से आशीर्वाद की कामना करते हुए समय–समय पर दर्शन करने की इच्छा जाहिर की है। उल्लेखनीय है कि निर्वतमान सरसंघ संचालक के.सी. सुदर्शन भी आचार्य महाप्रज्ञ से प्रभावित रहे हैं। सहसरसंघ संचालक के रूप में भी मोहन भागवत अनेकों बार आचार्य महाप्रज्ञ से मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए आते रहे हैं।

मोहन भागवत का पत्र लेकर आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शनार्थ पहुंचे क्षेत्रीय प्रचारक सुरेश सोनी ने बताया कि भागवतजी ने आचार्य महाप्रज्ञ से मिले नये दायित्व के सम्यक् निर्वाह हेतु आशीर्वाद की कामना की है और हमेशा की तरह आचार्यश्री से मार्गदर्शन देते रहने का अनुरोध किया है।

बीदासर, 14 अप्रैल, 2009।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने तेरापंथ भवन में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि यह एक धर्मसभा है अपने आपको धार्मिक मानते हैं धर्म में आस्था रखते हैं। धर्म का आचरण करते हैं और धर्म की बात सुनना चाहते हैं। हमारे देश में धर्म बहुत हर व्यक्ति किसी न किसी धर्म में विश्वास करता हैं वास्तव में धर्म अनेक रूप में है अनेक रूप में सामने आता है तो प्रश्न होता है कि सबसे अच्छा धर्म कौनसा? जब तक व्यक्ति अधूरा होता है मेरेपन का आग्रह होता है तब तक उसमें यह भावना होती है कि मैं जिस धर्म को मानता हूं वह धर्म श्रेष्ठ है। लेकिन वास्तव में धर्म वही श्रेष्ठ है जो व्यक्ति को राग और द्वेष से मुक्त करता है। इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि जीन भगवान अर्थात अर्हत वीतराग उनके द्वारा निरूपित जो धर्म है वह धर्म श्रेष्ठ है। जो श्रेष्ठ है उसका आचरण करने से जीवन भी श्रेष्ठ बनता है सुंदर बनता है जीवन में सुख और आनन्द की अनुभूति होती है। हमें समझना है कि धर्म है क्या? अगर हम शास्त्रों को देखें। उपदेशक हैं उनके प्रवचन सुनें तो धर्म की अनेक परिभाषाएं हमें उपलब्ध होती है।

यही एक समस्या पैदा हो जाती है कि अनेक परिभाषाओं में किस परिभाषा को श्रेष्ठ एवं सर्वांगीण मानें, परिपूर्ण मानें। यहां भगवान महावीर का अनेकांत दर्शन काम आता है, संभव है हर परिभाषा में सत्यांश होता है तो हम हम अलग–अलग दृष्टियों से उस परिभाषा के महत्त्व को समझें, उसे आत्मसात करें और उसका आचरण करें तो हमारा जीवन भी श्रेष्ठ बन जाता है।

मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने प्रवचन में कहा कि दुःख और सुख दोनों सापेक्ष रहते है। जैन आगमों एकत्व अनुप्रेक्षा की चर्चा मिलती है भगवान महावीर ने ध्यान किया था। अनुभव करते थे कि मैं अकेला हूं। अपने भीतर में अकेलेपन की अनुभूति करता है बाहर कैसी भी परिस्थित आ जाए। वह व्यक्ति आनन्द

की अवस्था में चला जाता है। जो एकत्व अनुप्रेक्षा का अनुभव कर लेता है वह चाहे किसी भी माहौल में रहे उसे परिस्थितियां बाधक नहीं करती।

प्रेक्षा से खुलते हैं शांति के द्वार

बीदासर, 14 अप्रैल, 2009।

स्थानीय कस्बे के बांठिया भवन में चल रहे प्रेक्षाध्यान शिविर के चौथे दिन प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलाल ने कहा कि प्रेक्षाध्यान अन्तरंग के खोज की प्रक्रिया है। जिस व्यक्ति ने अपने अन्तःकरण को पहचान लिया उस व्यक्ति के लिए शांति का द्वार उद्‌घाटित हो जाता हे। प्रेक्षा से दृष्टि तटस्थ होती है। तटस्थ दृष्टि से बन्धन नहीं हेाता है बन्धन का कारण रोग द्वेष है। राग–द्वेष से ही अशान्ति पैदा होती है, व्यक्ति दुःखी बनता हें दुःख से मुक्ति का मार्ग अध्यात्म है ध्यान हैं

ध्यान स्थिति है, अवस्था है, वह चेतना का शुद्ध स्वरूप है, उसमें अवस्थित रहना धर्म है, अध्यात्म है।